लोक पर्व हरेला के अवसर पर 'एक पेड़ माँ के नाम' कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल महोदय का सम्बोधन

(दिनांक 16 जुलाई, 2024)

जय हिन्द!

पौधे रोपकर इस पावन धरा को हरा–भरा बनाने के पर्व, समृद्धि, हरियाली, पर्यावरण संरक्षण के पर्व, प्रकृति उपासना को समर्पित देवभूमि उत्तराखंड के लोकपर्व 'हरेला' की आप सभी को हृदय से शुभकामनाएं।

भगवान बद्री विशाल व बाबा केदारनाथ जी से ये प्रार्थना करता हूँ कि देवभूमि की सांस्कृतिक धरोहर एवं परंपरा का प्रतीक यह पर्व सभी देश वासियों के जीवन में उत्तम स्वास्थ्य, सुख व समृद्धि लेकर आए।

प्रकृति को समर्पित इस अनूठे पर्व को आप सभी के साथ मिलकर मनाने पर मुझे अपार प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। प्रकृति का संतुलन बनाए रखने का पर्व 'हरेला' मानव और पर्यावरण के अंतर–संबंधों का अनूठा पर्व है। यह पर्व एक दूसरे की उन्नति, समृद्धि और लंबी उम्र की कामना का प्रतीक है।

साथियों,

हमारा भारत एक विविधताओं से भरा देश है। अपने देश में एक नीले आसमान के नीचे कई समृद्ध संस्कृति फल–फूल रही हैं। भारत की अनेकताओं में कुछ त्योहार ऐसे हैं, जो सारे देश को एक साथ जोड़ते हैं। सावन माह में हमारे देवभूमि उत्तराखंड में प्रकृति को समर्पित महत्वपूर्ण लोकपर्व हरेला इनमें से एक है।

देवभूमि के देवतुल्य लोग प्राचीन काल से ही प्रकृति के प्रति अपना प्रेम और अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाते आएं हैं। उत्तराखंड में मनाया जाने वाला यह पर्व मूलतः पर्यावरण के साथ–साथ कृषि विज्ञान को भी समर्पित है। वैसे तो उत्तराखंड में साल में तीन बार चैत्र मास, श्रावण मास और अश्विन मास में हरेला बोया जाता है। लेकिन भगवान शिव के प्रिय मास, श्रावण मास में मनाए जाने वाले हरेला पर्व का विशेष महत्व है।

यह पर्व लोक संस्कृति से जुड़ा हुआ है। यह दिन पर्यावरण की सुरक्षा के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाली चिपको आंदोलन की प्रणेता गौरा देवी एवं पर्यावरणविद् सुंदर लाल बहुगुणा के साथ ही मैती आंदोलन के सूत्रधार कल्याण सिंह मैती जी सहित इस मिशन में योगदान करने वाले सभी प्रकृति प्रेमियों को भी आभार ज्ञापित करने का अवसर है।

साथियों,

प्रकृति हमें प्राण वायु से लेकर हमारे जीवन चक्र को संतुलित रूप में संचालित करने के लिए मदद करती है। उसी मदद का आभार, प्रकृति की रक्षा और पूजा के रूप में प्रकट करने का पर्व है हरेला। इसलिए मेरा सभी उत्तराखंडियों से आग्रह है कि हरेला के दिन पेड़ लगाकर प्रकृति के संवर्धन में, प्रकृति के चिरायु रहने में अपना योगदान दें।

मेरा मानना है कि यह पर्व किसान भाईयों के लिए तो और भी शुभ पर्व है, क्योंकि यह वह दिन है जब किसान अपने खेतों में बुवाई का चक्र शुरु करते हैं। हरेला से एक दिन पहले, हम लोग भगवान शिव, देवी पार्वती और गणेश जी की मिट्टी की मूर्तियाँ बनाकर उनकी पूजा करते हैं और अगली फसल के अनुकूल मौसम के लिए उनका आशीर्वाद मांगते हैं।

साथियों,

मैं मानता हूँ कि हरेला उत्सव का उद्देश्य लोगों को प्रकृति के साथ–साथ पर्यावरण से जोड़ना भी है। चूंकि पर्यावरण संरक्षण उत्तराखंड की संस्कृति में रहा है, इसलिए प्रतिवर्ष पौधे लगाना पर्यावरण की रक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह पर्व प्रकृति द्वारा हमें प्रदान की गई चीजों का जश्न मनाने का एक तरीका भी है। तो आइए! इस जश्न को मिलकर मनाएं।

हम सभी जानते हैं कि प्रकृति का संरक्षण और संवर्धन हमेशा से ही देवभूमि की परंपरा का अहम हिस्सा रहा है। हरेला सिर्फ एक त्योहार न होकर उत्तराखंड की जीवनशैली का प्रतिबिंब है। यह प्रकृति के साथ संतुलन साधने वाला पर्व है। हरियाली को देखकर हर इंसान को खुशी मिलती है। हरियाली देखकर इंसान का तन–मन प्रफुल्लित हो उठता है। इसीलिए तो हरेला त्योहार उत्तराखंड के लोगों की सांस्कृतिक और पारंपरिक प्रथाओं में बहुत महत्वपूर्ण है।

यह त्योहार मनुष्य और प्रकृति के बीच घनिष्ठ संबंध का प्रतीक है, क्योंकि यह पर्यावरण के संरक्षण और प्राकृतिक दुनिया के साथ सामंजस्यपूर्ण संतुलन बनाए रखने के महत्व पर जोर देता है। विभिन्न अनुष्ठानों और समारोहों के माध्यम से, हरेला महोत्सव सभी जीवित प्राणियों के परस्पर जुड़ाव और पृथ्वी के सम्मान और सुरक्षा की आवश्यकता की याद दिलाता है। यह धरती हमारी माँ है और उसे समृद्ध एवं सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी हम सब की है।

कुल मिलाकर, हरेला महोत्सव एक समय–सम्मानित परंपरा है जो न केवल उत्तराखंड की कृषि विरासत का जश्न मनाती है बल्कि प्रकृति के साथ सद्भाव में रहने के महत्व की याद भी दिलाती है। यह पृथ्वी के साथ हमारे संबंध पर विचार करने और इससे हमें मिलने वाले आशीर्वाद की सराहना करने का भी पर्व है।

साथियों,

आंगनवाड़ी केंद्र बच्चों, गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं के समग्र कल्याण पर ध्यान केंद्रित करके राज्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये केंद्र छोटे बच्चों के उचित शारीरिक और संज्ञानात्मक विकास को सुनिश्चित करने के लिए पोषण, स्वास्थ्य देखभाल, प्री–स्कूल शिक्षा और टीकाकरण जैसी आवश्यक सेवाएं प्रदान करते हैं।

शुरुआती वर्षों में बच्चों का पोषण करके, आंगनवाड़ी केंद्र, स्कूल और उसके बाद उनकी भविष्य की सफलता के लिए एक मजबूत नींव रखते हैं। इसके अतिरिक्त, ये केंद्र कौशल–निर्माण कार्यशालाओं, स्वास्थ्य सेवाओं और मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य पर जागरूकता कार्यक्रमों की पेशकश करके महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए एक अहम भूमिका निभाते हैं।

आंगनवाड़ी केंद्रों में निवेश का मतलब राज्य की मानव पूंजी में निवेश करना है, जिससे स्वास्थ्य परिणामों में सुधार होगा, गरीबी का स्तर कम होगा और समग्र सामाजिक–आर्थिक प्रगति होगी। केंद्र और राज्य सरकारें इस दिशा में बेहतर तरीके से काम कर रही हैं। आज आंगनवाड़ी केंद्र पर वृक्षारोपण द्वारा हरेला पर्व की भावना तथा अपनी माँ के साथ अपनी धरती माता के संरक्षण के इस अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश में पिछले 10 साल से जो भी प्रमुख विकास योजनाएं संचालित हो रही

हैं, उन सभी में किसी न किसी रुप से पर्यावरण संरक्षण के साथ ही जल संरक्षण का आग्रह भी है। चाहे 'स्वच्छ भारत मिशन' हो या 'वेस्ट टू हेल्थ' से जुड़े कार्यक्रम हो, 'अमृत मिशन' के तहत शहरों में आधुनिक सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट्स का निर्माण हो, या सिंगल यूज प्लास्टिक से मुक्ति का अभियान हो या फिर नमामि गंगे अभियान के तहत गंगा स्वच्छता का अभियान हो, पर्यावरण रक्षा और जल संरक्षण के क्षेत्र में हमारे देश के प्रयास बहु आयामी रहे हैं।

जल संरक्षण की दिशा में प्रधानमंत्री जी द्वारा देशभर में अमृत सरोवर की शुरुआत की गई है। अमृत सरोवर योजना के तहत जिला स्तर, नगर एवं ग्रामीण क्षेत्रों में जर्जर हो चुके तालाबों का जीर्णोद्धार कर इन्हें पुनर्जीवित किया जा रहा है।

साथियों,

पर्यावरण संरक्षण हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है। वृक्षारोपण का कार्यक्रम केवल सरकारी कार्यक्रम तक ही सीमित न रहे। इसलिए इसे जन–जन का कार्यक्रम बनाने के लिए लोगों में जागरूकता लाना जरूरी है। यह चिंता का विषय है कि हम हर वर्ष लाखों की संख्या में पौध रोपण करते हैं, लेकिन इसके बाद देख–रेख के अभाव में कुछ ही पेड़ के रुप में जीवित रह पाते हैं। इसलिए वृक्षारोपण के साथ ही उनका संरक्षण हो इस ओर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। मेरा सुझाव है कि दूसरे व्यक्तियों से भेंट के

दौरान लोग बुके की जगह पर पौधा भेंट करें तो इससे निश्चित ही हरियाली अभियान को व्यापकता मिलेगी।

साल दर साल जल स्रोतों का सूखना बड़ी चिंता का विषय है। हमें जल स्रोतों के पुनर्जीवन की दिशा में बेहतर प्रयास करने होंगे। देवभूमि उत्तराखंड संस्कृति और प्रकृति का केंद्र भी है। उत्तराखंड की धरती से पर्यावरण संरक्षण का संदेश विश्वभर में जाए, इसके लिए वृक्षारोपण एवं अनेक सामाजिक कार्यों से हम सबको अपना योगदान देना होगा।

सरकार द्वारा विकास के साथ पर्यावरण संतुलन के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। उत्तराखंड का संतुलित विकास हो यह हम सबकी जिम्मेदारी है। प्रकृति के साथ छेड़छाड़ का परिणाम आज सबके सामने है। प्रकृति अनेक रूपों में बदला जरूर लेती है। इसलिए हम प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का तरीके से उपयोग करें।

हम प्रदेश में व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण करें, हरेला पर्व पर हम यह संकल्प लें। हमारे पूर्वजों द्वारा प्रकृति के संरक्षण और संवर्धन के लिए अनेक सराहनीय प्रयास किए गए। हमारी भावी पीढ़ी को हरा–भरा उत्तराखंड मिले, इस दिशा में हमें लगातार मिलकर प्रयास करने होंगे।

तो आईए! हम सब मिलकर इस त्योहार को, पर्यावरण के साथ अपने इस जुड़ाव को पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाएं और ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाएं। उस माता के नाम जो पेड़ों की तरह ही हमारा संरक्षण, पोषण एवं संवर्धन करती है। हमारे प्रधानमंत्री जी के आह्वान पर उनको समर्पित **'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान** को जन आंदोलन में बदलने के लिए आगे आएं।

जय हिन्द!